अंधायुग: पौराणिक कथा के माध्यम से यथार्थबोध की अभिव्यक्ति है।

(बी.ए. हिंदी प्रतिष्ठा द्वितीय बर्ष, पत्र 3)

डॉ.बिभा कुमारी, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

'अंधायुग' एक सफल गीतिनाट्य है। कवि धर्मवीर भारती ने 1954 में इसे लिखा। दो-दो महायुद्धों और उसके महाविनाश से उन्हें यह गीतिनाट्य लिखने की प्रेरणा मिली। युद्ध महाविनाश लेकर आता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात महाविनाश की जिन भयंकर परिस्थितियों का सामना पूरी दुनिया को करना पड़ा वह अत्यंत हृदय-विदारक है। कवि उन परिस्थितियों को महाभारतकालीन विकृति, अमर्यादा और अनैतिकता के निकट पाते हैं। डॉ. इंद्रनाथ मदान ने कहा है –

"भारती ने 'अंधायुग' में कौरव नगरी को उसकी उजड़ती और गिरती दशा में उसी तरह पकड़ने की कोशिश की है, जिस तरह इलियट ने 'वेस्टलैंड' में लंदन को और जेम्स जार्नस ने 'युलिसिस' में डबलिन को। इनकी स्थितियां कौरव नगरी की स्थिति से अलग होकर भी इस दृष्टि से समान हैं कि, इनमें संबंध टूट रहे हैं, इंसान की हस्ती खतरे में पड़ चुकी है, आस्था टूट चुकी है।"

महाभारत के युद्ध के पश्चात महाविनाश के भयंकर दृश्य 'अंधायुग' में चित्रित हैं। पौराणिक पृष्ठभूमि में समकालीन जीवन के यथार्थबोध को प्रकट करने वाले अनेक नाटक लिखे गए हैं। इन नाटकों में 'अंधायुग' का विशेष स्थान है। इस गीतिनाट्य में महाभारत के अठारहवें दिन की संध्या से कृष्ण की मृत्यु तक की घटनाएं चित्रित हुई हैं।

युद्ध के परिणाम कितने भयावह होते हैं, इस ओर कवि पाठकों का ध्यान खींचते हैं। युद्ध की विभीषिका मानव जीवन की सम्भावनाओं को समाप्ति की ओर ले जाता है। युद्ध से उत्पन्न मूल्यविहीनता, अमानवीयता, विकृति, कुंठा, वैयक्तिक व सामाजिक कुंठा इस नाटक में सजीव रूप में चित्रित हैं। ये परिस्थितियां मानव जीवन के लिए कितनी भयावह है, यह सोचने का विषय है। बाह्य युद्ध के साथ-साथ आंतरिक युद्ध भी चलता हुआ चित्रित किया गया है। सभी प्रमुख पात्र अंतर्द्वंद्व में हैं। मानव मन की अंतश्चेतना, उसके मनःव्यापार, मनोभाव, अतृप्त कामनाएं, मानसिक आघात-प्रतिघात इत्यादि को कवि ने पूर्ण सजीव रूप में चित्रित किया है। बाह्य दृश्यों-परिस्थितियों के समानांतर आंतरिक दृश्य भी पाठकों के समक्ष उपस्थित हैं। इस नाटक में लगभग सभी पात्र अंतर्मुखी दिखाए गए हैं जो अनेक प्रकार की मानसिकजटिलताओं, आंतरिक भेदभाव, असंतोष, घातक तृष्णा, निराशापूर्ण आकांक्षाओं, मनोविकृतियों, प्रतिशोध भरी कुंठाओं और व्यक्तिगत अहम इत्यादि से निरंतर गुजर रहे हैं। विद्वानों ने इस नाटक पर इलियट के 'मर्डर इन कैथेड्रल' के साथ-साथ नीत्शे और किरकेगार्ड के अस्तित्ववाद के प्रभाव को माना है। इसके साथ-साथ ईसाइयत के प्रभाव को भी स्वीकार किया गया है। धृतराष्ट्र, संजय, युयुत्स, अश्वत्थामा इत्यादि पात्र मिथकीय पात्र हैं। समकालीन साहित्य मिथक एवं मिथकीय पात्रों के माध्यम से वर्तमान परिस्थितियों का बोध करवाती है। आज की ह्रासोन्मुख परिस्थितियों की ओर तीव्र गति से लुढ़कती मानवता और मूल्यहीन संस्कृति इस गीतिनाट्य में सजीव रूप में उपस्थित है।

प्रभु श्रीकृष्ण की मृत्यु भी मिथक कुछ विद्वान इसे नीत्शे के कथन –"ईश्वर मर गया है।" से जोड़कर भी देखते हैं सम्पूर्ण नाटक में एक मिथकीय परिवेश है। धृतराष्ट्र का अंधापन मिथकीय संदर्भों में विशिष्ट अर्थ रखता है। आधुनिक साहित्य के केंद्र में ईश्वर नहीं अपितु मनुष्य है। नाटक में प्रभु श्रीकृष्ण की मृत्यु से यह आस्था प्रबल होती है कि प्रभु का दायित्व अब लोगों ने ले लिया है। नाटक के मिथकीय समापन से आधुनिक मूल्यबोध को स्पष्ट किया गया है। यह संदेश दिया गया है कि मनुष्य को यथाशीघ्र अपना दायित्व संभालने की आवश्यकता है। यदि मनुष्य ने अपना दायित्व प्रभु पर छोड़ दिया तो वह संजय, युयुत्स और अश्वत्थामा की भांति आत्मघाती, निष्क्रिय और अपंग हो जाएंगे।

नवीन परिस्थितियों को नाटक में जीवंत किया गया है। नए युग की नवीन मूल्य-संचेतना अत्यंत प्रबलता से उतारी गई हैं। पात्रों एवं कथा की दृष्टि से यह महाभारत कालीन है परंतु युगबोध की दृष्टि से यह आधुनिक है। 'युयुत्स' के अतिरिक्त किसी पात्र में बड़ा परिवर्तन नहीं किया गया है। पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है।